विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। -सुफियान सौरी

मौसमी बीमारियों की गिरफ्त में राजस्थान

प्रदेश में अनेक स्थानों पर बारिश, ओलावृष्टि के बाद मौसम ठंडा हो गया है और साथ ही घर-घर में सर्दी, खासी, जुखाम, बुखार, फ्लू जैसे वायरल इंफेक्शन के केस बढ़ने लगे है। डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया ने भी पैर पसार लिए है। मौसम में आये बदलाव के साथ ही मौसमी बीमारियों ने दस्तक दे दी है। घर-घर में मौसमी बीमारियों से पीड़ित लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। इस वर्ष अब तक डेंगू के मरीजों की संख्या करीब 15 हजार तक पहुंचने के समाचार है। मौसम में अचानक आए बदलाव के बाद मरीजों के आंकड़े में भारी उछाल आया है।

अस्पतालों के आउटडोर में खांसी, जुकाम और बुखार के मरीजों की संख्या भी बढ़ने लगी है। इस मौसम में ठंडी हवा चलती है जिससे अस्थमा और ब्रोंकाइटिस का खतरा रहता है। मौसम का यह बदलाव मानव के स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। मौसम में परिवर्तन को झेल नहीं पाते और तबीयत बिगड़ जाती है। विशेषकर जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर है वे मौसमी बीमारियों का शिकार जल्दी हो जाते है। मौसम परिवर्तन और बीमारियों का चोली-दामन का साथ है। नवम्बर का महीना शुरू होते-होते मौसम भी करवट लेता है। इस समय माह नवम्बर समाप्त हो गया है और दिसंबर ने दस्तक दे दी है। सर्दी लगातार बढ़ती जा रही है। अनेक स्थानों पर कोहरे का प्रकोप भी देखा जा रहा है। तापमान में भी घटत-बढ़त होता है। इससे बचने का एक मात्र उपाय सतर्कता और जागरूकता ही है। यह बीमारियां आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित कर कई बार आपके आंतरिक अंगों को भी प्रभावित करती हैं। इनसे बचने के लिए सावधानी रखना बेहद आवश्यक है।

भारत सरकार के निर्देशों के बाद राज्य के स्वास्थ्य विभाग ने चीन में बढ़ रहे निमोनिया के मामलों को देखते हुए राज्य के सभी जिला अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों के लिए एडवाइजरी जारी की है, जिसके मुताबिक राजस्थान के सभी मेडिकल कॉलेजों के प्रिंसिपल, प्रमुख चिकित्सा अधिकारी और सभी मुख्य चिकित्सा अधिकारियों के साथ ही निजी अस्पतालों पर निगरानी रखने को कहा गया है। राज्य सरकार ने संबंधित स्वास्थ्य अधिकारियों से बीमारी की रोकथाम और उपचार के लिए 3 दिन में कार्य योजना तैयार करने को कहा है। स्वास्थ्य विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने अधिकारियों से कहा कि वर्तमान में चिंताजनक बात नहीं है, लेकिन संक्रामक रोगों की निगरानी और रोकथाम के लिए पूरी सतर्कता आवश्यक है। उन्होंने मामले में अधिकारियों को नोडल अधिकारी नियुक्त करने और संभाग एवं जिला स्तर पर त्वरित प्रतिक्रिया दल गठित करने को कहा है।

कहते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में कंस्ट्रक्शन बढ़ा है। यह मच्छरों से होने वाली बीमारी का एक कारण है। कंस्ट्रक्शन साइट्स पर मच्छर ज्यादा पनप रहे हैं। वहीं पहले के मुकाबले सर्विलांस बढ़ा है। इस वजह से भी डेंगू के मामले अधिक दर्ज हो रहे हैं। बताते हैं कि न तो डेंगू, चिकनगुनिया की कोई दवा है और न ही वैक्सीन।

राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, यूपी,एमपी आदि प्रदेशों से मिली खबरों के मुताबिक मौसम परिवर्तन के साथ ही मौसमी बीमारियां और वायरल बुखार का प्रकोप पैर पसारने लगा है, जिसके चलते चिकित्सालय में मरीजों की संख्या में भारी इजाफा हुआ है। मौसम परिवर्तन के साथ ही सर्दी, खांसी- जुकाम, चिकनगुनिया, डेंगू, वायरल बुखार, उल्टी- दस्त के रोगियों की संख्या बढ़ी है। मच्छरों का प्रकोप भी बीमारियां बढ़ाने में सहायक हो रहा है। डॉक्टरों के अनुसार तापमान में उतार-चढ़ाव के चलते मौसमी बीमारियां बढ़ी हैं। इस मौसम में जोड़ों में दर्द, बदन दर्द, सिरदर्द, खांसी, जुकाम एवं बुखार होता है। बदलते मौसम में खान पान में सतर्कता रखनी जरूरी है। इस मौसम में बचाव करने की बेहद जरूरत है। सुबह-शाम को खासतौर पर गर्म कपड़े जरूर पहनें अन्यथा सर्दी की चपेट में आने की संभावना है। बच्चों का खास ध्यान रखना चाहिए और बच्चों को गर्म इनरवियर पहनाने चाहिए।

खान-पान और साफ-सफाई का ध्यान न दे पाने की वजह से चिकनगुनिया और डेंगू की समस्या से लोगों को दो-दो हाथ करने पड़ रहे है। मौसम बदलने के साथ ही बीमारियों का होना भी शुरू हो जाता है और बुखार-जुकाम आदि बीमारियां ज्यादा होने लगती है। चिकनगुनिया, डेंगू आदि होने का खतरा भी बढ़ जाता है और कई बार हम पहचान नहीं कर पाते हैं कि रोगी को चिकगुनिया का बुखार है या डेंगू बुखार या फिर सामान्य बुखार। इस वजह से बीमारी ज्यादा बढ़ जाती है और मुश्किल से नियंत्रण में आती है। चिकित्सा विशेषज्ञों का कहना है कि मौसम परिवर्तन और तेजी से होने वाले शहरीकरण के असर ने इन बीमारियों को फैलने में सहायता की है।

कहते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में कंस्ट्रक्शन बढ़ा है। यह मच्छरों से होने वाली बीमारी का एक कारण है। कंस्ट्रक्शन साइट्स पर मच्छर ज्यादा पनप रहे हैं। वहीं पहले के मुकाबले सर्विलांस बढ़ा है। इस वजह से भी डेंगू के मामले अधिक दर्ज हो रहे हैं। बताते हैं कि न तो डेंगू, चिकनगुनिया की कोई दवा है और न ही वैक्सीन। चिकनगुनिया और डेंगू मच्छर के काटने की वजह से होते हैं। मादा एडिस एजिप्टी मच्छर के काटने कारण माना जा रहा है। लेकिन कुछ मामलों में, एडीज मच्छर का काटना भी इस बीमारी की वजह मानी जा रही है। चिकित्सा विशेषज्ञों का मानना है कि 5 अलग-अलग प्रकार के वायरस इन मच्छरों से फैल रहे हैं, जो इस बीमारी का कारण बन रहे हैं। डेंगू गैर-संक्रामक है, यह एक मरीज से सीधे किसी अन्य व्यक्ति में नहीं फैल सकता। चिकनगुनिया वायरस भी मच्छर ही द्वारा किया जाता है। हालांकि दोनों बीमारियों की पहचान विशिष्ट वायरस से हो सकती है। एक रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष देश में डेंगू बुखार के दर्ज केसों संख्या एक लाख को पार हो गई है।

चिकनगुनिया में तेज बुखार, लगातार सिरदर्द, आंखों से पानी आना और थकान होना इसकी विशेषता है। इस बीमारी में भले बुखार उतर जाए, लेकिन थकान और सिरदर्द बना रहता है। अधिकांश रोगियों को जोड़ों में दर्द की शिकायत भी होती है। यह दर्द हफ्तों और महीनों के लिए बना रह सकता है। तेज बुखार, सिर दर्द, मतली आना, बदन दर्द और लाल चकत्ते होना डेंगू की पुष्टि करता है। रोगियों की संख्या में डेंगू बुखार एक रक्तस्त्रावी जो अनिश्चितता के बादल कम ब्लड प्लेटलेट्स का स्तर और रक्त प्लाज्मा के रिसाव में परिणाम का कारण बनता है। डेंगू भी भारी रक्तस्त्राव मौत का कारण बन सकता है। डेंगू और चिकनगुनिया के बीच का अंतर जानने के लिए रोगी के खून की जांच जरूरी है। इससे खून में मौजूद विशिष्ट वायरस का पता लगा सकते हैं।

-अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 2 दिसम्बर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, अश्लेषा नक्षत्र रात्रि 9:36 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 8:55 तक, वणिज करण सांय 7:28 तक, चन्द्रमा रात्रि 9:36 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-वृश्चिक, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 2:06 तक है और रात्रि 9:36 से आरम्भ होगा। यमघट योग रात्रि 9:36 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा रात्रि 7:28 से आरम्भ होगी। आज छींठ छट है। आज कृषि और शिक्षा दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:22 से 9:40 तक, लाभ-अमृत 9:40 से 12:16 तक, शुभ 1:35 से 2:53 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:04, सूर्यास्त 5:29

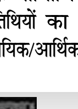

मेष

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण-धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

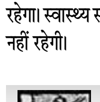

सिंह

अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

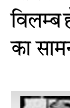

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

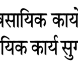

वृष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमतान से संपन्न हो सकते हैं।

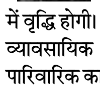

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

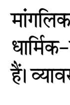

मकर

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। आज धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

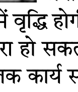

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक विवादों का निपटारा हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

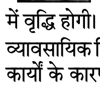

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

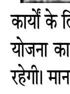

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

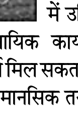

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा। व्यावसायिक कार्य के संबंध में उचित परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

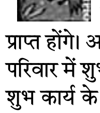

वृश्चिक

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ कार्य संपन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

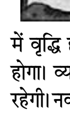

मीन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मैं जानूं यह सच नहीं पर मैं मानूं नाहिं

डॉ. रामावतार शर्मा

मानव मनोविज्ञान का गहन अध्ययन और फिर उसका व्यवहार में उपयोग कई रोचक बातों को सामने लाता है। आज जब हम अपने चारों तरफ देखते हैं तो हर तरफ कारें दौड़ रही हैं, आसमान में हवाई जहाज उड़ रहे हैं, कंप्यूटर हर कार्य को तेजी से करने में सहायक हो रहा है तथा तकरीबन हर व्यक्ति मोबाइल का उपयोग कर रहा है। भौतिक रूप में तो विज्ञान हर घर तक पहुंच गया है परंतु क्या लोग विचार तथा व्यवहार में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने लगे हैं? यहां काफी कठिनाई वाली बात नजर आ रही है। विज्ञान और तर्क को उपयोग में लाना तो आसान है पर वैज्ञानिक तथा तार्किक दृष्टिकोण अपनाना उतना आसान कार्य नहीं है। इसका एक कारण तो यह है कि लकीर का फकीर बने रहने में लोगों को सुरक्षा का भ्रम बना रहता है। लोग एक काल्पनिक दुनिया बुनते हैं और उसी में अपने आप को सबसे अधिक सुरक्षित महसूस करते है जबकि आंकडों और वस्तुस्थिति के अनुसार यह सत्य नहीं है परंतु पूर्वाग्रहों की जड़ें बहुत गहरी होती हैं जिन्हें सामान्य व्यक्ति उखाड़ना नहीं चाहता है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि ज्यादातर लोगों के जीवन में सर्वाधिक कष्ट अपने परिवार, अपने समाज, जाति और धर्म के लोग ही देते हैं परंतु वे लोग नफरत और वैमनस्य विधर्मी, विजातीय लोगों के साथ रखते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इन मामलों में हां में हां मिलाने वालों की कमी नहीं है। भीड़ सुरक्षा का भ्रम पैदा करती है और ऊपर से ये लोग कल्पना करने लगते हैं कि ऐसा कार्य कर वे अपने धार्मिक कर्तव्य का वहन कर रहे हैं। नोन लगे न फिटकरी और रंग चोखा आवे वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए ये लोग तार्किक आपत्ति उठाने वालों को वामपंथी और मैकॉले के शिष्य घोषित कर संवाद की सारी संभावनाएं समाप्त कर देते हैं। अपने दिल में वे जानते हैं कि जिस रास्ते की तरफ वे इंगित कर रहे हैं वहां हिंसा और विनाश है, समाधान नहीं परंतु उनका अहंकार उन्हें सत्य से दूर रखता है।

मनोवैज्ञानिक शोधकर्ताओं के अनुसार धरती के करीब 98 प्रतिशत लोग किसी न किसी अंधविश्वास (सुपरस्टीशन), मिथक (झूठी कहानी), भ्रम (इल्यूजन) या पूर्वाग्रह (प्रेज्यूडिस) का बोझा ढोते रहते हैं। जो बचे हुए दो प्रतिशत हैं वे इन 98 प्रतिशत लोगों के बारे में इन्हीं सब बातों को ढोते रहते हैं। विशुद्ध तर्क आधारित और निर्लिप्त जीवन अपने आप में एक काल्पनिक बात हो सकती है। ऐसी स्थिति में मध्यम मार्ग ही सबसे बेहतर रास्ता लगता है जिसमें अधिकतर जीवन तर्क आधारित और पूर्वाग्रह मुक्त रहे और मनुष्य सामाजिक उपयोगिता के साथ आनंदमय जीवन जिए। अब सवाल उठता है कि फिर लोग इस तरह का जीवन क्यों नहीं जी रहे हैं जो सामान्य तर्क पर आधारित हो? यहां यह देखा गया है कि जो सभ्यता जितनी प्राचीन होती है उस पर मिथक और अंधविश्वासों का उतना ही बोझ होता है। शायद यही कारण है जिसके फलस्वरूप भारत, चीन और मिस्त्र के समाजों में मिथक, अंधविश्वासी परंपराओं, किवदंतियों आदि की भरमार है जो धर्म, संस्कृति या फिर सामाजिक व्यवहार पर आधारित होते हैं। आधुनिक वैश्वीकरण के बाद से कई नए पूर्वाग्रह और अंधविश्वास विभिन्न मानव समूहों में प्रविष्ट होते नजर आ रहे हैं।

परिभाषा की दृष्टि से देखें तो अंधविश्वास वह अवधारणा है जो तर्क या विज्ञान की कसौटी पर खरा न उतर पाए और जिसका वास्तविकता या क्रिया प्रतिक्रिया से कोई संबंध नजर नहीं आता हो। बार बार गलत सिद्ध होने के बावजूद भी लोग अपने विश्वास तंत्र से मुक्त नहीं होना चाहते। भविष्यवाणी या कर्मकांड के असंख्य असफल उदाहरणों के बावजूद भी लोग इन्हें छोड़ने का साहस नहीं दिखा सकते। परंपराएं और अंधविश्वास स्वपोषित होते हैं। इन्हे कोई चलाता नहीं। ये स्वयं चलते रहते हैं क्योंकि 98 प्रतिशत जनता यथास्थिति बनाए रखने में विश्वास करती है क्योंकि वह हर अनिश्चितता से भयभीत हो जाती है। यह तकरीबन उसी तरह होता है जहां बार-बार की असफलता के बावजूद लोग चुनावों के एग्जिट पोल को बड़ी व्यग्रता से सुनते हैं। असफल विवाहों के पहाड़ के नीचे जन्मपत्री के गुण मिलाते हैं, अपने नाम को अंग्रेजी में विचित्र तरह से लिखते हैं ताकि कृपा बरसे!

लोग अपने हृदय में तो जानते हैं कि अंधविश्वास, मिथक, पूर्वाग्रह क्या है पर वे इसे स्वीकार नहीं करते। उनका मानना है कि चलो इसे भी कर लेते हैं क्योंकि कोई नुकसान तो नहीं हो रहा। अपने इस तर्क द्वारा वे तर्क आधारित वैज्ञानिक मन के विकास को बार-बार नष्ट करते रहते हैं जिसके परिणाम स्वरूप एक समय के बाद उनका जीवन पूरी तरह से इन कुरीतियों और पूर्वाग्रहों में जकड़ जाता है जिससे मुक्ति तकरीबन असंभव सी हो जाती है। याद रखना चाहिए कि कोई भी कुरीति, अंधविश्वास, अंध परंपरा, पूर्वागृह और मिथक न तो प्रभावहीन होता है और ना ही अहानिकर होता है क्योंकि वह बौद्धिक एवम् वैज्ञानिक विकास को अवरूद्ध करता है। समाज में विभक्ति और राष्ट्र के ह्रास में पूर्वाग्रहों और मिथकों का बड़ा योगदान होता है क्योंकि ये सब हिंसा तथा विघटन को जन्म देते हैं। अंधविश्वास और मिथक इस लिए कालजयी हो जाते हैं क्योंकि मानव जाति में बहुसंख्यक लोगों की रूखी जिंदगी में ये थोड़ा परिवर्तन लाते हैं। सारे वैज्ञानिक विकास के बावजूद चांद के दिखाई देने का इंतजार, भूख के बाद मृत्युपर्यंत 36 पकवानों का सेवन, परियां, हूरें और अप्सराएं आदि बातें आज भी मानव के विचारों की गहराई में बैठी हैं। जीवन हमारी आंखों के सामने फल, फूल और अनाज के रूप में पृथ्वी से फूट रहा है परंतु हम दुआएं, प्रार्थनाएं आसमान की तरफ कर रहे हैं। तर्क और साक्ष्य की बातें करने वाला वामपंथी घोषित हो जाता है और पोंगापंथी व्यक्ति के सामने धनी, बली और समाज के नायक साष्टांग दंडवत हो रहे हैं।

अंधविश्वासों ने मानव जीवन के हर पक्ष पर अपनी जकड़ मजबूत कर ली है। भाग्य, दुर्भाग्य, पनौती, शुभ, अशुभ आदि के चक्रव्यूह में फंसा मानव समाज का बहुमत तर्क को लगातार परे धकेलता जा रहा है। पर याद रखा जाना चाहिए कि तर्क की हार और अंधविश्वास की विजय

एक दिन पृथ्वी पर वास्तविक काले युग को जन्म देगी जो एक बड़ी त्रासदी साबित होगी, जिसे रोका जा सकता है।

-डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

सिंघाना-चिड़ावा के बीच टोल टैक्स नहीं होने के बावजूद भी यात्रियों से वसूले जा रहे रुपए

- **29 किलोमीटर की इस दूरी में एक भी टोल टैक्स मौजूद नहीं है**
- **राजस्थान रोडवेज के नियमों के चलते क्षेत्र की जनता को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है**

खेतड़ी का केन्द्रीय बस स्टैण्ड।

खेतड़ी, (निसं)। राजस्थान रोडवेज के नियमों के चलते क्षेत्र की जनता को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। सिंघाना से चिड़ावा के रूट पर चलने वाली बसों में यात्रियों से टोल टैक्स के नाम पर रुपए वसूले जा रहे हैं, जबकि 29 किलोमीटर की इस दूरी में एक भी टोल टैक्स मौजूद नहीं है।

सिंघाना निवासी बिहारी लाल कुमावत ने बताया कि वह 28 नवंबर को वह खेतड़ी डिपो की रोडवेज बस में सवार होकर सिंघाना से चिड़ावा गया था। इस दौरान जब उसे कंडक्टर ने टिकट दी तो 20 रूपए वसूले गए, जिसमें टोल टैक्स के दो रूपए अलग से दर्शाए गए हैं। इसके अलावा जब वह 29 नवंबर को वापस अपने घर सिंघाना आ रहा था तो झुंझुनू डिपो को बस में उससे 26 रूपए वसूल किए गए। उसे कंडक्टर द्वारा दी गई टिकट में भी दो रूपए टोल टैक्स के दर्शाए हुए हैं, जबकि सिंघाना-चिड़ावा सड़क पर वर्तमान में कोई टोल टैक्स भी मौजूद नहीं है। उन्होंने बताया कि राजस्थान सरकार की ओर से रोडवेज बसों में महिलाओं को किराए में छुट करने की घोषणा की गई थी, लेकिन अधिकांश बसों में सरकार के नियमानुसार किराए में छूट भी नहीं दी जा रही है। उससे वरिष्ठ नागरिक की टिकट दिए जाने के बाद भी दोनों बसों में अलग-अलग किराया वसूल किया गया, जिससे रोडवेज प्रबंधन की लापरवाही भी सामने आ रही है।

जानकारी के अनुसार सिंघाना से चिड़ावा रोड पर पूर्व में गाड़ाखेड़ा के पास टोल टैक्स स्थापित था, लेकिन जुलाई माह में टोल टैक्स की अवधि खत्म हो जाने के पर उसे हटा लिया गया था। टोल टैक्स हटाने के बावजूद भी निगम द्वारा यात्रियों को दी जाने वाली टिकट में दो रूपए अतिरिक्त रूप से वसूले जा रहे हैं। जिससे यात्रियों की जेब पर आर्थिक नुकसान पड़ रहा है। इस रूट पर राजस्थान रोडवेज की प्रतिदिन करीब 70 बसें चलती हैं। ऐसे में निगम द्वारा नियमों के फेर में आमजन से बेवजह रुपए वसूलने का काम किया जा रहा है। सिंघाना रूट पर चूरू, डीडवाना, सीकर, नागौर, बीकानेर, खेतड़ी, झुंझुनू सहित आसपास के डिपो की बसों का भी संचालन किया जा रहा है। ऐसे में यदि रोडवेज मुख्यालय से जल्द निर्देश नहीं मिलते तो जनता से वसूले जाने वाले रुपए से रोडवेज को फायदा पहुंचाने का प्रयास कर आमजन को आर्थिक नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

दिलदार सिंह, डीपो मैनेजर खेतड़ी का कहना है कि साधारण व एक्सप्रेस बसों में किराया अलग-अलग होता है। टोल टैक्स पहले लगा हुआ था, लेकिन अब इसमें संशोधन नहीं किया गया है। रोडवेज मुख्यालय से निर्देश मिलने के बाद किराया सूची में संशोधन किया जाएगा।

राकेश कुमार, डीपो मैनेजर झुंझुनू का कहना है कि टोल टैक्स के नाम पर पैसे वसूल करने के मामले में मेरे को जानकारी नहीं है। मामले की जांच करवाता हूं।

"बून्दी महोत्सव" में मीठी मनुहार से अभिभूत हुए पावणे, चित्रकारों ने कैनवास पर चित्र उकेरे

पुलिस परेड ग्राउंड पर कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किये।

सुख महल में देशी-विदेशी पावणों की देशी व्यंजनों से मनुहार की गई।

- **कार्यक्रम में लोक कलाकारों ने कच्छी घोड़ी नृत्य और अन्य नृत्य गीतों से समा बांधा**

बूंदी (निसं)। बूंदी महोत्सव के दूसरे दिन भी विविध मनोहारी कार्यक्रमों का दौर जारी रहा। सुख महल में सुरम्य प्राकृतिक छटा के बीच देशी-विदेशी पावणों की देशी व्यंजनों से मनुहार की गई। सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता वीके जैन, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी महावीर कुमार शर्मा, सहायक निदेशक धनराज मीणा, मनीष मीना, जिला रसद अधिकारी शिवजीराज जाट, सहायक पर्यटन अधिकारी प्रेम शंकर सहित जिला प्रशासन के अन्य अधिकारियों एवं गणमान्य नागरिकों ने मेहमानों की खातिरदारी करते हुए उन्हें हाड़ौती के पसंदीदा व्यंजन कत्त बाफले से सत्कार किया।

कार्यक्रम में पावणों को साफे बांधे गए और तिलक किया। पर्यटकों को रोली अक्षत का टीका किया और रक्षा सूत्र बांधे। संस्कृति संस्था की ओर से शालिनी विजय एवं सहयोगी सदस्यों ने विदेशी सैलानियों का स्वागत किया। उन्हें रोली का टीका लगाकर मुंह मीठा कराया। विदेशी महिलाओं को चूड़िया पहनाई गई और मेंहदी से हाथ सजाए गए, जिससे वे फूली न समाई। विदेशी मेहमान इस मान मनुहार से बहुत अभिभूत नजर आए और इस आयोजन को सराहते रहे। कार्यक्रम में लोक कलाकारों ने कच्छी घोड़ी नृत्य और अन्य नृत्य गीतों से समा बांधा। विदेशी सैलानी लोक कलाकारों के साथ थिरकते दिखे। इस अवसर पर बूंदी महोत्सव समिति सदस्य पुरुषोत्तम पारीक, के.सी.वर्मा, संस्कृति संस्था अध्यक्ष शालिनी विजय, अशोक शर्मा तलवास, दिनेश विजयवर्गीय आदि मौजूद रहे।

चित्रकारों ने कैनवास पर उकेरे चित्र:- बूंदी महोत्सव के अवसर पर आर्ट गेलेरी में बूंदी ब्रश के चित्रकारों ने शुक्रवार को कैनवास पर चित्र उकेरे। कार्यक्रम का शुभारम्भ जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राजपाल सिंह ने श्री यंत्र का चित्र उकेर कर किया। इस अवसर पर मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने चित्र बना रहे चित्रकारों से चित्रों की जानकारी ली। चित्रकारों के चित्र की प्रदर्शनी शनिवार को आमजन के लिए लगाई जाएगी। कलाकारों की प्रस्तुतियों पर खूब तालियां बजी:- विविध रंगारंग कार्यक्रमों के बाद शाम को पुलिस परेड ग्राउंड पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में पर्यटन विभाग कोटा उपनिदेशक विकास पांड्या, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी महावीर कुमार शर्मा, आईएएस मोहित, उप पुलिस अधीक्षक नरेंद्र पारीक ने शिरकत की। लोक कलाकारों ने नृत्यों की मनमोहक प्रस्तुतियां देकर कार्यक्रम को यादगार बना दिया। कार्यक्रम में पाली की गंगा देवी ने तेरहताली नृत्य की आकर्षक प्रस्तुति दी। वहीं अलवर के युसूफ खान के भपंग वादक की प्रस्तुति ने दर्शकों को जोश से भर दिया। जयपुर के प्रभु लाल मीणा के आदिवासी घेरा पद दंगल ने पारंपरिक गीतों के साथ लोक नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी। बीकानेर की वर्षा सैनी के भवाई नृत्य और अलवर के बनेसिंह द्वारा प्रस्तुत रीम भवई ने दर्शकों की खूब तालियां बटोरी।

किशनगढ़ की किरण सैनी के द्वारा चरी नृत्य के माध्यम से अपनी कला का प्रदर्शन किया, तो लोगों ने तालियां बजाकर प्रोत्साहित किया। वहीं बाड़मेर के गौतम परमार ने कालबेलिया नृत्य की जोरदार प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में बारां के शाहाबाद निवासी गोपाल धानुक अपनी सहरिया लोक नृत्य की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति में भरतपुर के अशोक शर्मा ने मयूर नृत्य प्रस्तुति से माहौल कृष्ण भक्तिमय कर दिया। कार्यक्रम का संचालन नीता डांगी व पुरुषोत्तम शर्मा ने किया। कार्यक्रम में सहायक पर्यटन अधिकारी प्रेम शंकर सैनी, बूंदी महोत्सव समिति सदस्य पुरूषोत्तम पारीक, अनिल शर्मा, अशोक शर्मा तलवास, के.सी.वर्मा सहित बडी संख्या में दर्शकों आदि की मौजूदगी रही।

इन चित्रकारों ने बनाये चित्र:- बूंदी ब्रश के अध्यक्ष सुनील जांगिड ने राजस्थानी पोर्टेट, विजय सिंह सोलंकी ने विरासत बचाओ, राजेन्द्र बैरागी ने सवारी की, राकेश शर्मा ने गढ़ पैलेस, पंकज सिसोदिया ने हाडी रानी का रचना पंचोली ने बूंदी शैली, हर्षा गॉड ने टाइगर एवं हेरिटेज, ब्रजेश कुमार ने सुखमहल, सोहन लाल कुम्हार ने मॉडल आर्ट, जोतेंद्र ने राजस्थानी महिला, तरु जैन ने सूर्य नारायण की प्रतिमा, विधात्री सिंह ने शिकार बुर्ज, लाभचंद ने सहरिया, प्रीति सरोजा ने हाथी पोल, हेमराज ने शैल चित्र, विवेक ने हेरिटेज का चित्र बनाया। चित्रकला कार्यशाला में कोटा से भी चित्रकार आए है। इस अवसर पर सहायक पर्यटन अधिकारी प्रेमशंकर सैनी, खेल अधिकारी वाई बी सिंह, नंद प्रकाश शर्मा सहित बूंदी ब्रश एवं स्कूल के छात्र छात्राएं मौजूद रहे।